मीरा जैन

तुलना

ई-मेल-jainmeera02@gmail.com

"मैडम जी! बची हुई बाहर की सफाई मे कल कर दूँगी। मोहित को सर्दी-खाँसी हो रही है, मुझे जल्दी घर जाना है। पाँच सौ रुपए एडवांस दे दीजिए मैडम जी, ठंड बहुत पड़ रही है, उसके लिए एक स्वेटर भी लाना है। पिछले साल वाला छोटा हो गया है।"

विनिता से पाँच सौ रुपए लेकर बीना ने सीधे अपने घर का रुख किया। उसके जाते ही विनिता बर्तन माँज रही रीमा की ओर पलटी और कहा—"रीमा ! देखो, बीना अपने बच्चे का कितना ख्याल रखती है। उसे जरा भी कुछ हुआ, तुरंत इलाज करवाती है। तुम्हारे भी दो बच्चे हैं लेकिन मुझे लगता है, तुम बच्चों के प्रति चिंतित नहीं रहती। 'जो हो रहा है, होने दो' वाली सोच है तुम्हारी। तुमने बच्चों पर खर्च करने के लिए कभी मुझे एडवांस नहीं माँगा। उनकी बीमारी-सिमारी की कभी बात तक नहीं की। मुझे लगता है, तू टाइम से बच्चों को स्कूल भी नहीं भेजती होगी। बच्चों के प्रति इतनी लापरवाही ठीक नहीं। तू भी बीना की तरह अपने बच्चों का ध्यान रखा कर, समझी ।"

"हाँ समझ गई मैडम जी! आप सही कर रहे हैं। मै बच्चों के प्रति लापरवाह तो नहीं, बल्कि निश्चिंत हूँ।"

‘‘पर क्यों ?"

"बच्चों के दादा-दादी साथ जो हैं, फिर मुझे काहे की चिंता।"

निर्णय

मीरा जैन

दौरे पर आए मंत्री जी ने कार में समीप बैठ स्थानीय नेता से विस्मयकारी मुद्रा मे पूछा- "जयसिंह ! क्या सीमा पर इस गाँव का कोई जवान शहीद हुआ है जिसके कारण इस शव यात्रा में इतनी भीड़ है! हर धर्म के लोग नजर आ रहे हैं!! हमें भी उतरकर कुछ दूर इस शव यात्रा में पैदल चलना चाहिए ?"

स्थानीय नेता ने बेपरवाही से जवाब दिया, "मंत्री जी! शहीद तो हुआ एक मजदूर, सीमा पर नहीं बल्कि जमीन के अंदर ।"

"यह कैसे संभव है?"

स्थानीय नेता ने स्पष्ट किया—"सेफ्टी टैंक साफ करते वक्त, उसमें उत्पन्न होने वाली विषैली गैस से! क्यों ना हम दूसरे से मार्ग से चलें।"

इतना सुनते ही मंत्री जी ने कार में ही बैठे पी ए। को आदेश दिया—"रमन जी! आज ही आदेश निकाल दो कि आज के बाद कोई भी बिना ऑक्सीजन मास्क के सेफ्टी टैंक में नहीं उतरेगा।"

इतना कह मंत्री जी कार से उतरकर शव यात्रा में शामिल हो गए।

उद्देश्य

"अरे यार समीर! तुम इतने पढ़े-लिखे होकर भी ये दकियानूसी धार्मिक रीति-रिवाज को मानते हो। धार्मिक पर्व तो आत्मोत्थान के लिए होते हैं, ना कि इन आडंबरों के लिए। तुम्हारी माँ ने आदेश दिया—'आज फलां-फलां धार्मिक पर्व है, जा छत्तीस किस्म के पेड़ों से एक-एक पत्ती तोड़ ला' और तुम आज्ञाकारी पुत्र की तरह बिना किसी ना-नुकुर के पूरे मोहल्ले में घूम-घूम कर छत्तीस किस्म के पेड़ ढूँढ उनसे एक-एक पत्ती तोड़ रहे हो। हद हो गई अंधविश्वास की ।"

समीर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया—"प्रवीण ! तुम्हें परेशानी हो रही हो तो मेरे साथ मत चलो। तुम इसका एक पक्ष ही देख रहे हो, दूसरा नहीं। इसमें अंधविश्वास वाली कोई बात ही नहीं है। आज्ञापालन से माँ को खुशी मिलेगी, साथ ही इस तरह के क्रियाकलापों से ईश्वर के प्रति आस्था भी बढ़ती है; और दूसरा, पैदल घूम-घूम कर नाना प्रकार के वृक्ष तलाशने में पैदल भ्रमण तो हो ही रहा है जो स्वस्थ रहने के लिए बहुत जरूरी है; साथ ही पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है।"

"वह कैसे ?"

"इसी बहाने इंसान धर्म की खातिर ही सही छत्तीस प्रकार के वृक्षों को संरक्षित तो करेगा।"